श्री गणेशाय नमः
श्री सरस्वत्यै नमः
श्री गुरवे नमः
ॐ चन्द्रमौलेश्वराय नमः
ॐ वरशिवलिङ्गाय नमः

जगद्गुरु आदि शंकराचार्य के पशुपतिनाथ दर्शन यात्रा महत्व प्रसंग

संहिताशास्त्रि अर्जुन प्रसाद बास्तोला

पशुपति - पदार्थः
सर्वथायत् पून पाति तैश्चयद् रमते सह ।
तेषामधिपतिर्यश्च तस्मात् पशुपतिः स्मृतः ॥

पशुपतिनाथ के नाम का अर्थः
पाशवद्धः सदा जीवः
पाश मुक्तः सदा शिवः

भगवान पशुपतिनाथ परब्रह्म शिव के अनादि रुप है । वह "पञ्च वक्रम् त्रिनेत्रम्" नाम से परिचित होते हैं । ॐकार के उत्पत्ति भगवान शिव के दक्षिण मुह से 'अ'कार, पश्चिम मुह से 'उ'कार, उत्तर मुह से 'म'कार, पूर्व मुह से चन्द्रविन्दु तथा उर्ध्व ईशान मुह से 'नाद' की उत्पत्ति होकर ॐकार उत्पत्ति हुवा है ।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तथा उर्ध्व ईशान मुह से सुक्ष्मवेद आदि उत्पत्ति हुवा है । जिस से पूर्व सद्योजात मुह से सामवेद, दक्षिण अघोर मुह से अथर्ववेद, पश्चिम तत्पुरुष मुह से ऋग्वेद, उत्तर वामदेव मुह से यजुर्वेद तथा उर्ध्व ईशान मुह से सुक्ष्मवेद उत्पत्ति हुवा है । इन्ही पाँच वेदों से समस्त उपनिषद आदि वाङ्मय प्रकट हुवा है । उदाहरण के लिए यजुर्वेद की इन मन्त्रों लिजीये:

ॐ यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदभ्योऽखिलंजगत् ।
निर्ममेतमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम् ॥ **(कृ.य.सं)**

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुपतिभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।
वीरसर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

(ऋग्वेद १०।८५।४४)

वेद में उल्लेखित भगवान पशुपति (शिव) के आठों नाम इस प्रकार है:

ॐ महादेवाय चन्द्रमूर्त्तये नमः ॥
ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः ॥
ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः ॥
ॐ रुद्राय ऽग्निमूर्त्तये नमः ॥
ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः ॥
ॐ शर्व्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः ॥
ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः ॥
ॐ भीमाय ऽऽकाशमूर्त्तये नमः ॥

इस से यह वात स्पष्ट हो जाता है की भगवान आशुतोष शिव से पञ्च तत्व की उत्पत्ति के श्रोत पञ्च वक्र त्रिनेत्रं ही है । **श्री पशुपति नाम ही एक मात्र यजमान मूर्ति और पूजनिय है** वाँकी सव प्रतिकात्मक है । इसी तरह महामृत्युञ्जय मन्त्र की उत्पत्ति भी पञ्च वक्र त्रिनेत्रं से हुवा है । उदाहरण के लिए मार्कण्डेय ऋषिद्वारा लोक कल्याण के लिए प्रकट किया हुवा महामृत्युञ्जय मन्त्र का ध्यान निम्नानुसार है:

चन्द्रर्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं
मुद्रापाशमृगाक्ष-सुत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् ।
कोटीन्दु-प्रगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं
कान्तं विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयंभावयेत् ॥

महामुनी मार्कण्डेय ऋषिद्वारा प्रतिपादित तथा वर्तमान में प्रचलित महामृत्युञ्जय मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ त्रयंम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

इसी तरह लोक कल्याण के लिए ऋग्वेद से इन मन्त्रों को भी विशेष स्थान दिया हुवा है:

ॐ अहंरुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्म्द्विषेशखेहन्तवाउ
अहं जनाउ समदं कृणोमि अहं द्यावापृथिवी आविवेश ॥

(ऋक्.१०।१२५।६)

यजुर्वेद में भगवान पशुपतिनाथ के वारे में इस तरह वर्णन किया हुवा है:

ॐ भवाय च रुद्राय च नमः शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नील ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने । ..... नमः शङ्गवे च पशुपतये च नमः ऽउग्राय च भीमाय च ..... । सद्यो जातम्प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवे नाति भवे भवस्वमां भवोद्भवाय नमः । वामदेवाय नमो जेष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बल विकरणाय नमो बलाय नमो बल प्रमथनाय नमः । सर्व भूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः । अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररुपेभ्यः । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्र प्रचोदयात् । ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् । ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्म, शिवो मेऽअस्तु सदा शिवोम् । शिवो नामासि स्वधितिस्तं पिता नमस्ते अस्तु मा मा हि () सीः । निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ।

ॐ यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदभ्योऽखिलंजगत् ।
निर्ममेतमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम् ॥

महादेवश्चन्द्रो भवती रविरीशान उदितः
श्रुतीवायुश्चोग्रो भवतिहनो रुद्र इति वै ।
भवस्तोयं पृथ्वी भवति स हि शर्वः
पशुपतिस्तथात्मा भीमः सं भवति जगदष्टात्मनि शिवे ॥

पशुपतिनाथ – प्राङ्गणपरिसर में श्री वत्सला के दर्शन पूजा करने के वाद पुनः जयमङ्गला, नील सरस्वती, भस्मेश्वर महादेव, चौसट्ठी लिङ्ग वा चौरासी यन्त्र, शीतलादेवी और कीर्तिमुख भैरव के शिरोभाग, गणेशजी, शंकरनारायण, सूर्य, विष्णु, कामदेव, अष्टमातृका, नवग्रह, उन्मत्तभैरव, हनुमान, सत्यनारायण, नन्दी, नृत्तेश्वर, वेलवृक्ष, किरांतेश्वर, गुह्यश्वरी, गोरखनाथ, विश्वनाथ, मनकामना, श्रीराम, लक्ष्मीनारायण, राजराजेश्वरी नवदुर्गा, मृगेश्वर, गंगामाई, विरुपाक्ष, वासुकी, भृङ्गी, संतापेश्वर, मुक्तिमण्डल, राजमुकुट श्रीपेच (अभी श्री ५ विरेन्द्र ऐश्वर्याच लिखा हुवा सोनेका), चण्डेश्वर, बुढानिलकण्ठ, गुप्तेश्वर, कलियुगेश्वर, ब्रह्मनाल आदि दर्शन पूजा करने के वाद ही भगवान पशुपतिनाथ दर्शन पूजा स्वीकार करते है ।

पशुपतिनाथ मन्दिर के चारों दिशाओं मे अष्टभैरव तथा उत्तर में दक्षिणकाली की मूर्ति है ।

मन्दिर के उपर में षोडश मातृका की मूर्ति है ।

मन्दिर के पूरव में श्रीकृष्ण परिवार की मूर्ति है ।

मन्दिर के दक्षिण में श्रीराम परिवार की मूर्ति है ।

मन्दिर के पश्चिम तरफ पाण्डव परिवार की मूर्ति है ।

मन्दिर के उत्तर तरफ ब्रह्मा, विष्णु आदि भगवान की मूर्तियां है ।

भगवान पशुपतिनाथ की एक निराकार सहित चार मुह है ।

पूर्व सद्योजात, जगन्नाथ स्वरुप की पूजा किया जाता है ।

पूर्वमुखं सद्योजातं सामवेदनादोदयम्:
संवर्त्ताग्नि–तडित्प्रदिप्त–कनक–प्रस्पर्द्धि–तेजोरुराङ्,
गम्भीर–ध्वनि–साम–वेद–जनकं ताम्रधरं सुन्दरम् ।
अर्धेन्दु–द्युति–लोल–पिङ्गल–जटा–भार–प्रबद्धोरगम,
वन्दे सिद्ध–सुराऽसुरेन्द्र–नमितम् पूर्वम् मुखं शूलिनः ॥

दक्षिण अघोर, रामेश्वर स्वरुप की पूजा किया जाता है ।

दक्षिणमुखमघोरमथर्ववेदनादोखयम्:
कालाभ–भ्रमराञ्नन–द्युति–निभं व्यावृत्त–पिङ्गेक्षणङ्,
कर्णोद्भासित–भोगि–मस्तक–मणि–प्रोन्नद्ध–द्रंष्ट्राङ्कुरम् ।
सर्प–प्रोत–कपाल–शुक्ति–शकल–व्याकीर्ण–वक्षोरगम्,
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनञ्चाथर्व–नादोदयम् ॥

पश्चिम तत्त्पुरुष, द्वारका स्वरुप की पूजा किया जाता है ।

ऋग्वेद–नादोदयं तत्पुरुष पश्चिम मुखम्:
प्रालेयाऽचल–चन्द्र–कुन्द–धवलङ् गोक्षीर–फेनप्रभम्,
भस्माभ्यक्तमनङ्गदेह–दहन–ज्वालावली–लोचनम् ।
ब्रह्मेन्द्रादि मरुद्गणार्चित–पदम् ऋग्वेद–नादोदयम्,
वन्देऽहं सकलङ्कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ॥

उत्तर वामदेव, बद्री केदार स्वरुप की पूजा किया जाता है ।

उत्तरमुखं वामदेवं यजुर्वेदनादोदयम्:
गौरङ्कुङ्कुम्–पङ्क–गन्ध सलिलं व्यापाण्डु–गण्ड–स्थलम्,
भ्रू–विक्षेप–कटाक्ष–वीक्षण–लसत्–संसक्त–कर्णोत्पलम् ।
स्निग्धम् बिम्ब–फलाधरम् प्रहसितं नीलालकं सुन्दरम्,
वन्दे याजुष–वेद–घोष–जनकं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ॥

शिर में निराकार श्रीयन्त्र, महात्रिपुरासुन्दरी स्वरुप की पूजा किया जाता है ।

उर्ध्वमुखमीशानं सूक्ष्मवेद–प्रणव–नादोदयम्:
व्यक्ताव्यक्त–निरूपितञ्च परमं षट्त्रिंश–तत्वात्मकम्,
तस्मादुत्तर–तत्वमक्षरपदं ध्येयं सदा योगिभीः ।
ॐ कारादि–समस्त–मन्त्र–जनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मात् परम्,
वन्दे ऽहं परमेश्वरस्य वदनं ख–व्यापि तेजोमयम् ॥

धर्मस्य त्रयोस्कन्धाः (शतपथ ब्राम्हण)
अध्ययनं, यज्ञं, दानं इति ।

१. ब्रह्माजी अवतार नही लेते । आवश्यकता में अवतरित होते हैं ।

२. शिवजी भी अवतार नही लेते ।

३. विष्णु भगवान वार वार अवतार लेते रहते हैं ।

४. शिवजी आवश्यकता में अवतरित होते है ।

५. आदि शंकराचार्य शिवजी के अवतार थे ।

६. विकराल कलियुग की दोष से व्यक्ति व्यक्ति के उद्धारार्थ कैलाशवासी भगवान शंकर शंकराचार्य के रुप में इस संसार में प्रकट हुए थे ।

७. आदि शंकराचार्य ज्ञान देने के लिये अवतरित हुए थे ।

८. पच्चिस सय बर्ष पहले आदि शंकराचार्य भारत के कालाडि गाँवों मे नम्बुदरी ब्राह्मण के कुल में शिवगुरु नाम के ब्राह्मण के वंश में आर्याम्बा की कोख में अवतरित हुए थे ।

९. बृषाचल क्षेत्र में ४८ दिन तक शिवजी के ध्यान में उपासनारत हुए थे । शिवगुरु ने घी का अभिषेक किया था ।

१०. शिवगुरु दम्पत्ती को वटुकोनाथेश्वर भगवान ने वरदान देने का निश्चय किया ।

११ शिवजी ने स्वप्न में पुछा, आप की भक्ति से प्रसन्न हुँ, वरदान ले लो ।

१२ लेकिन एक शर्त है, अल्पायु बुद्धिमान वा दीर्घायु मूर्ख ।

१३. मुर्ख से गाँवं, नगर, कूल, पडोसी तक को प्रताडित करेगा सोच समझकर, अल्पायु विद्वान मांग लिया ।

१४.वटुकनाथ शिव आर्याम्बा के गर्भ में ज्योति रुप में वैशाख शुक्ल पञ्चमी के दिन आर्द्रा नक्षत्र में प्रकट हुए थे ।

१५.उन का नाम शंकर रख् दिया गया । तेजष्वी थे । दिव्यदेही थे । पैरों में हरिण, परशु, शूल, कपाल आदि के पहेचान थे ।

१६. चार साल के हुए तो पिताजी का स्वर्गवास हो गया । पाँच साल में उन का उपनयन संस्कार हुवा ।

१७. उपनयन पश्चात ब्रम्हचर्याश्रम गुरुकूल में रहकर वेद वेदाङ्ग की अभ्यास किया ।

१८.द्वादशी का दिन था एक दरिद्र वृद्धा के घर भिक्षार्थ गए हुए थे, कुछ अन्नपात नही होने से वृद्धा ने आँवला का फल भिक्षा में दे दिया । ऐसी हालत देख्कर शंकराचार्य को दया आयी और उन्होनें उसी स्थान पर **कनकधारा स्तोत्र** पाठ कर दिया । जो आजकल **कनकधारा स्तोत्र** नाम से प्रसिद्ध है ।

१९. माताजी आर्याम्बा की पूर्णा नदी में स्नान करने का रित था और विमार होने से नही जा पा रही थी तव शंकराचार्य ने प्रार्थना कर के घर में नदी को बुलाकर स्नान करा दिया । इस तरह माताजी को आनन्द मिल गया ।

२०. आठ साल के हुए थे, उन्हो ने सन्यास लेकर घर–घर जा कर धर्म के उपदेश देकर अद्वैतवाद की अठोट ले लिया और माताजी से सन्यास की सम्मति माग लिया ।

२१. माताजी ने सन्यास की सम्मति नहीं दीया तो ग्राह से पकड्वाकर सम्मति ले लिया और सन्यास की सम्मति प्राप्त हुवा ।

२२. कषाय (गेरु) वस्त्र पहनकर गोविन्दपाद से महावाक्य की उपदेश प्राप्त किया ।

२३. अद्वैत तत्व की प्रचार करो बोलकर गुरुजी से जो आदेश मिला था, वह वनारस चले आये । कासी विश्वनाथ पहुँचकर मनीषापञ्चक का पाठ किया ।

२४. विश्वनाथ पहुँचकर एक बडा घट्ना हो गया । चार राहगिर कुत्ते मिल गये । धर–धर कर के उनको भगा दिया । एक हरिजन मिला, दुर जावो–दुर जावो वोले । उस हरिजन ने आप द्वैतवादी है कि अद्वैतवादी कहकर पुछा ।

२५.शंकराचार्य को यथार्थ ज्ञान हुवा । मै तो द्वैतवादी हुँ क्या, यह समझकर हरिजन के पाव पड् गये । वो हरिजन स्वयम् भगवान विश्वनाथ के अवतार रुप में उपस्थित हुए थे ।

२६. वे चार कुत्ते जो थे चार वेद स्वरुपी थे । इस तरह **द्वैत** भाव से **अद्वैत** भाव मे विश्वनाथ में प्रकट हुए थे ।

२७. उस के वाद मनीषापञ्चक पाठ कर के भगवान विश्वनाथ का दर्शन कर लिया ।

२८. अचानक वेदव्यास मिल गये । मिलने के वाद महत्वपूर्ण वात हो गयी । वेदव्यास ने कहा कि आज तुम्हारा १६ साल की आयु समाप्त हो रही है, मै ने ब्रह्माजी से और १६ साल माग् कर ले आया हुँ । अव इस आयु में आप **ब्रह्मसूत्र की** भाष्य कर के प्रचार करें, वोल कर अर्न्तध्यान हो गये ।

२९. उस के वाद वहं **प्रयाग** चले गये । उधर कुमारिल भट्ट से मिल कर अद्वैत सिद्धान्त की करोडौं शिष्य बनाया ।

३०. **माहिष्मती** नगर में पहुँचकर कर्मकाण्ड के विद्वान मण्डन मिश्र से मिले और शास्त्रार्थ करते वक्त हँस्–हँस् कर शंकराचार्य ने जवाफ देनेपर मण्डन मिश्र आश्चर्य चकित होकर परास्त भी हो गये ।

३१. शास्त्रार्थ के क्रम में निर्णायक मण्डल में मण्डन मिश्रकी धर्मपत्नी भारती भी थी । जिस का माला मुर्झाएगा, उस का पराजय होना निश्चत था । मण्डन मिश्र का माला मुर्झाया । मण्डन मिश्र को सन्यास स्विकार करना पड्ा ।

३२. मण्डन मिश्र, उन की पत्नी और शंकराचार्य गृहत्याग कर सन्यास लेकर जा रहे थे तव सरस्वती भगवती आगे खड्ीहुइ मिल् गयी । शंकराचार्य ने वनदुर्गा की मन्त्र से उन को रोक दिया था ।

और उसी जगह शारदापीठ घोषणा कर दिया गया । आज उस स्थल को **शृंगेरी शारदापीठ** कहते हैं ।

३३. माताजी आर्याम्बा की शरीर कमजोर हो रही थी तव शंकराचार्य कालाडी घर में आ गये । उनका मिलन हो गया और माताजी खुश हो गयी । भगवान विष्णु ने दूत भेज दिया । शंकराचार्य ने भगवान विष्णु का स्तुति कर लिया । तुरुन्त भगवान विष्णु के पार्षद के साथ विमान में रखकर माताजी को वैकुण्ठ भेज दिया ।

३४. अपनी प्रतिज्ञा अनुसार दाहसंस्कार कर कर्मकाण्ड भी कर लिया ।

३५. उस के वाद अनेक स्थल चलते–चलते विभिन्न धर्मावलम्वीओं के विश्वास जित कर वैदिक मार्ग की स्थापना किया । देवालयों की स्थापना किया । यन्त्रों की स्थापना किया ।

३६.फिर कर्नाटक की मुकाम्बिका क्षेत्र में चले गये और अम्बिका की उग्र रुप को मन्त्र बल से सौम्यरुप करा दिया ।

३७. उस गावों में एक ब्राह्मण गुङ्गे लड्के को लेकर शंकराचार्य की दर्शनार्थ आ गये । शंकराचार्य ने ब्राह्मण को आप कौन हैं पुछा तो, ब्राह्मण ने मैं आत्मा हुँ कहा तो शंकराचार्य ने उन को **हस्तमलकाचार्य** नाम दे दिया । **पद्मपादाचार्य** और **सुरेस्वराचार्य** पढाया ।

३८. दुसरा शिष्य को **त्रोटकाचार्य** नाम दे दिया ।

३९. शंकराचार्य तामिलनाडू मध्यार्जुन क्षेत्र पहुँचकर **"सत्यम् और अद्वैतम्"** का प्रचार कर प्रशन्न हो गये ।

४०. उस के वाद **चिदम्बर** क्षेत्र में पहुँच गये । उधर **पतञ्जली** (जिन्होने डुकृत करणे सूत्र कण्ठस्थ किया था) से मिलकर चिल्भषेश नटराज की मन्दिर में **पञ्चाक्षर** और **अन्नाकर्षण यन्त्र** की स्थापना किया ।

४१. फिर जम्बुकेश्वर में पहुँचकर **अखिलाण्डेश्वरी देवी** की मन्दिर में जाकर उग्ररुप को शान्त कर दिया ।

४२. चलते चलते जगन्नाथ पहुँचकर एक मठ स्थापना कर लिया । उस जगह का मठाधिश पद्मपाद को बनाकर उस पीठ का नाम **गोवर्द्धन पीठ** रख दिया ।

४३. द्वारका में पहुँचकर एक मठ स्थापना कर लिया । हस्तमलकाचार्य को उस जगह का मठाधिश बना दिया ।

४४. तीर्थयात्रा की प्रसंग में **तिरुचेन्दुर** पहुँचकर सुब्रहमण्य भुजंङ्ग स्तोत्र पढकर **तिरुपति वालाजी** की दर्शन कर लिया ।

४५. **जम्बुकेश्वर** में पहुँचकर **श्रीरंङ्गनाथ** की दर्शन कर **जनाकर्षण यन्त्र** की स्थापना किया ।

४६. **वालाजी की मन्दिर में** भक्ति से **विष्णुपादादिकेशान्त स्तोत्र** की रचना कर **धनाकर्षण यन्त्र** की स्थापना किया ।

४७. उस के वाद **द्वादशज्योर्तिलिङ्ग** में चले गये और हर ज्योर्तिलिङ्ग पर एक–एक स्तोत्र पाठ कर लिया ।

४८. **श्रीशैल** की **मल्लिकार्जुन** जा कर मल्लिकार्जुन वृक्ष की निचे शिव लिङ्ग की दर्शन कर लिया और सौ श्लोक की **शिवानन्द लहरी** संग्रह कर लिया ।

४९.मल्लिकार्जुन का अर्थ, मल्लिका का अर्थ वेलीपुष्प और अर्जुन का अर्थ ककूभ है । इस तरह ककूभ वृक्ष में वेलीपुष्प कि लता रहने से उक्त स्थान में स्थापित शिव लिङ्ग स्थान का नाम **मल्लिकार्जुन** हो गया ।

५०. फिर निर्जन स्थान हाट्केश्वर में पहुँचकर काफी दिन तक शंकराचार्य ने तप किया ।

५१. उक्त हाट्केश्वर में शंकराचार्य के शिष्य पद्मनाभ ने नृसिंहावतार का आराधना कर के उन का रक्षा कर लिया । जिस जगह शकराचार्य के उपर एक कपाली ने आक्रमण किया था ।

५२. फिर बदरीनाथ पहुँच गये । अलकानन्दा के तट में रेत में दवे हुये **बदरीनाथ** की मूर्ति को स्थापना कर प्राण प्रतिष्ठा कर लिया । आजतक उसी मूर्ति का दर्शन हो रहा है ।

५३. उस के वाद शंकराचार्य **केदारनाथ** आ गये । **शिवपादादिकेशान्त** स्तोत्र रचना कर लिया । शिवजी खुश हो गये और पाँच स्फटिक के शिवलिङ्ग दे दिया । शंकराचार्य ने पार्वती की स्तुति नहीं किया था, इसीलिये **सौन्दर्यलहरी** पार्वती की स्तुति भी दे दिया ।

५४.फिर शंकराचार्य शिव पार्वती से विदा होकर कैलास से चलने पर द्वारपाल नन्दीदेव ने कैलास की सारी सम्पत्ति लेकर नहीं जा सकते बोलने पर ५९ श्लोक दे दिया । ४१ श्लोक लेकर बाहर आ गये और वाद में ५९ श्लोक पूर्ण कर के उक्त सौन्दर्यलहरी का पारायण कर आयुष्मिक फल पाने का विश्वास आजतक किया जाता है ।

५५. प्राप्त पाँच शिव लिङ्ग में से **मुक्ति शिव लिङ्ग केदार** में, **मोक्ष शिव लिङ्ग चिदम्वरम** में, **भोग शिव लिङ्ग शृंगेरी** में और **योग शिव लिङ्ग कामकोटी** में स्थापना किया ।

५६. उस के वाद शंकराचार्य नेपाल आ गये । उन को राज सम्मान मिला । श्री पशुपतिनाथ दर्शनार्थ चले गये । गुह्येश्वरी दर्शनार्थ चले गये । गुह्येश्वरी भगवती एकाउन्न पीठ में से एक है ।

५७. नेपाल के **नीलकण्ठ क्षेत्र में वर शिव लिङ्ग** स्थापना किया । प्रमाण इस प्रकार है:

"शूलगंगा जले स्नानं कुर्वतात्र स्थितं मया ।
स ह्रदो नीलकण्ठाख्यो नैपालस्योत्तरे स्थिता ॥
यत्र स्नात्वा नरो लोके सर्वतीर्थवगाहनम् ।
वेत्रगंगा जलं प्राप्य संकल्प नियतो व्रजेत् ॥ (हि.ख.स्क.पुं)"

इस तरह स्नान कर के **वरशिवलिङ्ग** स्थापना कर लिया था ।

५८.कामाक्षी की अनुग्रह से चक्रस्वरुप का शहर निर्माण कर लिया । उन्ही चक्र स्वरुप श्रीयन्त्र की पूजा की व्यवस्था किया ।

५९.देवताओं का निवास होने से इस शहर का नाम **देवपतन** रह गया । अभी देवपतन से **देउपाटन** नाम रह गया है ।

६०. भट्ट पूजारी नियुक्त कर के **श्रीयन्त्र** की पूजा की प्रथा भी चलाया गया ।

(१) विन्दु – लाल – सर्वानन्दमय – महात्रिपुरासुन्दरी
(२) त्रिकोण – पिला – सर्वसिद्धिप्रद – चतुराम्बा
(३) वसुकोण – हरा – सर्वरक्षाकर – त्रिपुरसिद्धा
(४) अन्तर्दशा – काला – दश त्रिकोण – सर्वरोगहर – त्रिपुरमालिनी
(५) वहिर्दशा – रक्त – दश त्रिकोण – सर्वार्थसाधक – त्रिपुराश्री
(६) चतुर्दशा – निला – चौध त्रिकोण – सर्वसौभाग्यदायक – त्रिपुरवासिनी
(७) अष्टदल – गुलावी – अष्ट कमल – सर्व संक्षेभणी – त्रिपुरासुन्दरी
(८) षोड्सदल – पिला – षोड्श कमल – सर्व आशापूरक – त्रिपुरेशी
(९) भूपुर – हरा – त्रैलोक्यमोहन – त्रिपुरा

६१. इस तरह श्रीयन्त्र की पूजा करने के लिये चतुरायन की पूजा विधि है । पञ्चमञ्चिका की पूजा की विधान है । (..... **दशमुद्रासमाराध्या**....) दशों मुद्रा में भगवती की आराधना होता है । पक्ष के भेद से नित्या से चित्रा तक और चित्रा से नित्या तक पूजा करने कि प्रथा **नित्यषोडशीकार्णव तन्त्र** नेपाली हस्त लिखित में है ।

६२. बुद्धमार्गी से शास्त्रार्स्थ में बुद्धमार्गी परास्त होकर एक दिन श्री पशुपतिनाथ में बुद्ध मुकुट पहनाकर पूजा करने का प्रथा चलाया ।

६३. माता बज्रयोगिनी दर्शन जाते हुए भगवती ने लड्की के रुप में दर्शन दिया ।

६४.माता बज्रयोगिनी मन्दिर के पहाडी रास्ते पर शंकराचार्य को प्यास लग गया और उस लड्की से जल माग् लिया लेकिन उस लड्की ने जल उधर है अपने आप जावो कर के इशारा किया । शक्ति नही है क्या, शक्ति भी चाहिये सोचकर उसी भाव में शक्ति आवश्यक होता है सोचकर उन को **"शिवशक्त्यायुक्तो"** प्रमाण में विश्वास हुवा ।

६५. बज्रयोगिनी में **शिव स्वरुप बुद्ध** और **शक्ति स्वरुप तारा** की दर्शन किया ।

६६. नेपाल की **पशुपतिनाथ के समान लिङ्ग, वाग्मती समान की नदी** और **गुह्यश्वरी समान की पीठ** तिनों लोक में नहीं हैं ।

"पशुपति समं लिङ्गं वाग्मत्या च समा नदी ।
गुह्यश्वरी समं पीठं नास्ति ब्रम्हाण्ड गोल के ॥" (ने.मा.)

६७. **"वाग्वत्या सरितेस्तीरे नाम्ना पशुपतिः स्मृतः ।**
ततो ब्रह्मादयो रुद्रमूचुः प्राञ्जलयः सुराः ॥" (ने.मा.पृ.३)

तीन आँख् एक सुवर्ण सिंङ्ग मृगरुप भगवान शिवजी को देवताओं ने स्तुति करने पर भी प्रसन्न नहीं होने से देवताओं ने बलपूर्वक मृग की सिंङ्ग पकड्ा और सिंङ्ग चार टुकड्ा होकर **महाशिवस्वरुप पशुपतिनाथ** हो गये ।

६८. **"स्थितोऽहं पशुरुपेण श्लेष्मान्तकवने यतः ।**
अतः पशुपतिर्लोके मम नाम भविष्यति ॥
ये मां पशुपतिं देवा द्रक्ष्यन्ति मनुजा भुवि ।

पशुजन्म न तेषां तु मत् प्रसादाद्भविष्यति ॥" (ने.म.पृ.२।४)

मैं श्लेष्मान्तक वन में वाग्मती की किनार में पशु रुप में स्थित हो जाउँङ्गा । और कहीं नहीं जाउँङ्गा । पशुपतिनाथ मेरा नाम होगा । जो देव गण, मनुष्य गण मेरा दर्शन पूजा करेगा वो कभी पशु योनी में उत्पन्न नही होगा ।

६९. **"हिमाद्रिस्तुङ्ग शिखरात प्रोद्भूता वाङ्मती नदी ।**
भागीरथ्या शतगुणं पवित्रं तज्जलंस्मतम् ॥" (श.क.द्रु.३१९)
तत्रस्नात्वा हरेर्लोका उपस्पृश्य दिवस्यतः ।
त्यक्त्वादेहं नरायान्ति ममलोकं न संशय ॥ (जलेश्वर महात्म्य)
अतोऽस्या वाग्वती नाम भविष्यति न संशय ।" (ने.म.)

हिमपर्वत से उत्पन्न हुई **वाग्मती नदी** भागीरथी गंगा से सौ गुणा पवित्र है । इस वाग्मती नदी की जल में स्नान करने से नरदेह त्याग के वाद मेरे लोक में जायेगा शंका नही है भगवान शिवजी ने कहा है । इसीलिये भगवान शिव की मुह से निकले हुए होने से वाग्मती नाम रह गया है इस में कोई शंका नही ।

७०. **"तवाङ्गं पतितं गुह्यं वाग्वतीतटिनीतटे ।**
मृगस्थल्या उदोच्यां तु तत् पीठं परमं महत ॥
मत्सन्निधौ तेऽन्तिके वा गुह्यशीसन्निधावपि ।
ये जपन्ति नरा भक्त्या तेषां सिद्धिर्भविष्यति ॥" (ने.म.५)

भगवान पशुपतिनाथ ने माता पार्वती से कहा, तुम्हारा पिछला जनम् सतीदेवी की अंग गुह्य पतन होकर वाग्मती नदी की किनार में मृगस्थली से उत्तर तरफ परम पीठ है, वो मेरे नजदिक रहेगा । उस जगह जो जप, पाठ, पूजा करेगा, उस भक्त को सिद्धि प्राप्त होगा ।

७१. **"मम वात्सल्यतो यस्मात् स्थातुमिच्छसि पार्वति ।**
तस्मात् ते वत्सला नाम भविष्यर्ति वरानने ॥
ममाग्नेय्यां सदा तिष्ठ ममाज्ञातो महेश्वरि ।
वाग्वत्याः पयसि स्नात्वा दृष्ट्वा त्वां वत्सलां शिवे ॥
द्रक्ष्यन्ति मां नरा ये वै ते स्युः कैलासगामिनः ।
मतसन्धौ तेऽन्तिके वा गुह्यशीसन्निधावपि ॥ (ने.म.५)

मेरी सवसे प्यारी होने से हम तुम्हे अपने आग्नेय दिशा में स्थापित करेंगे । तुम्हारा नाम **वत्सला** होगा । जो वाग्मती नदी में स्नान करके वत्सलेश्वरी की दर्शन करेगा उसे कैलास में मेरे नजदिक मेरे साथ रह पायेगा ।

७२. इस तरह भगवान पशुपतिनाथ की पूजा करने के लिये दक्षिण भारत के गृहस्थि द्रविड ब्राह्मण पूजारी की व्यवस्था भी किया गया ।

"कर्नाटकामहाराष्ट्रा आन्ध्रद्रविडजातिजाः ।
विन्ध्याद् दक्षिणी जाताः प्रायश्चितं विधाय चः ॥
अर्चा पशुपतिश्चैव मरणान्तञ्च पूजयेत् ।
मृतस्तादृश एवान्यश्चाधिकारी तदा भवेत् ॥"

विन्ध्याचल पर्वत के दक्षिण तरफ जन्मे हुए कर्नाटक–महाराष्ट्र–आन्ध्र–तथा द्रविड जाति के गृहस्थ ब्राह्मण प्रायश्चितपूर्वक (शुद्धिपूर्वक) श्री पशुपतिनाथ की पूजा अर्चना जीवनभर करें और मरणोपरान्त पूर्वोक्त विधान अनुसार पूजा हो ।

७३. श्री पशुपतिनाथ की आगम घर की आजतक के पूजारीः–

विक्रम सम्वत	नामः
१७९१ में	साम्वसदाशिव भट्ट
१८०४ में	श्रीकृष्ण भट्ट
१८१६ में जयप्रकाश मल्ल से श्रीकृष्ण भट्ट के पद और उन का वित्तार्हरण ।	
१८२६ में	गणपति भट्ट
१८६० – १९०७	सदानन्द भट्ट
१९०७ – १९८०	नोग्या भट्ट
१९८० – २०१८	गोपाल भट्ट
२०१८ से हालसम्म	मदन भट्ट

७४. श्री पशुपतिनाथ मन्दीर की आजतक के मूल पूजारीः–

विक्रम सम्वत	नामः
१७९१ में	साम्वसदा शिव भट्ट
१८१६ में श्रीकृष्ण भट्ट के पद खारेजी में कुवेर गिरी, भिम गिरी, काशी गिरी ।	
१८२८ में फिर	श्रीकृष्ण भट्ट
१८६७ में	श्री नीलकण्ठ भट्ट (शंकराचार्य से नियुक्त)
१८८३ में	श्री गोपाल भट्ट
१९०४ मे	श्री रामचन्द्र भट्ट
१९०९ में	श्री श्याम भट्ट
१९२२ में	श्री अनन्तराम भट्ट
१९४५ में	श्री कृष्ण शास्त्रि
१९७४ – १९८० तक	श्री दामोदर शास्त्रि
१९८० – २०२२ तक	श्री सुव्रमह्त्यण्यम्
२०२२ – २०४७ तक	श्री पद्मनाभ शास्त्रि
२०४७ – २०५५ तक	श्री सुव्रमह्त्यण्यम् मार्कण्डेय
२०५५ – २०७१ तक	श्री महावलेश्वर
२०७१ – आजतक	श्री गणेश भट्ट

द्रष्टव्यः उपयुक्त संकलित आलेख में देवादिदेव श्री महादेव भगवान श्री पशुपतिनाथ, श्रीयन्त्र और आदि शंकराचार्य के विषय में संक्षिप्त जानकारी देने का प्रयास किया गया है ।

(लेखन सहयोगीः सरोज बास्तोला "जीवनामृत")